नव भारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

ईरान - इजरायल युद्ध और अमेरिका

आखिरकार अमेरिका, इसराइल और ईरान के बीच चल रही जंग में शमिल हो गया है. जाहिर है यह कोई रहस्य नहीं है कि अमेरिका और इजरायल लंबे समय से ईरान के परमाणु कार्यक्रम को अपने लिए एक गंभीर खतरा मानते रहे हैं. उनका मानना है कि ईरान परमाणु हथियार बनाने की दिशा में बढ़ रहा है, जो मध्य पूर्व की भू-राजनीतिक स्थिरता को गंभीर रूप से बिगाड़ सकता है. इसी डर के परिणामस्वरूप, हाल ही में अमेरिका ने 'ऑपरेशन मिडनाइट हैमर' के तहत ईरान के फोर्डो, नतांज और इस्फहान स्थित परमाणु ठिकानों पर हमला किया. अमेरिकी रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ ने इन हमलों को ईरान के परमाणु कार्यक्रम को 'पूरी तरह तबाह' करने वाला बताया है और सैटेलाइट छवियों से भी भारी नुकसान के संकेत मिले हैं.

इन अमेरिकी हमलों से पहले, इजरायल भी ईरान के परमाणु और सैन्य ठिकानों पर लगातार हमले कर रहा था. इन इजरायली कार्रवाइयों से ईरान के परमाणु संवर्धन सुविधाओं को नुकसान पहुंचा और कुछ प्रमुख वैज्ञानिकों और अधिकारियों की भी जान गई. इन हमलों का स्पष्ट उद्देश्य ईरान की परमाणु क्षमताओं को कमजोर करना और उसे परमाणु हथियार विकसित करने से रोकना है. परमाणु कार्यक्रम को नुकसान पहुंचाने के साथ-साथ, अब अमेरिका और इजरायल की ओर से ईरान में शासन परिवर्तन की इच्छा भी खुलकर सामने आ रही है. अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने ईरान पर हमलों के बाद स्पष्ट रूप से कहा है कि यदि वर्तमान ईरानी शासन अपने देश को 'फिर से महान' नहीं बना सकता, तो 'सत्ता परिवर्तन क्यों नहीं होगा'. इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू ने भी शुरुआत में खामेनेई की सत्ता को उखाड़ फेंकने की बात कही थी, हालांकि बाद में उनके बयान में थोड़ी नरमी आई.

यह एक गंभीर मोड़ है क्योंकि इसका मतलब सिर्फ परमाणु सुविधाओं को निशाना बनाना नहीं, बल्कि ईरान की राजनीतिक व्यवस्था को ही बदलना है. ऐसी रिपोर्टें भी हैं कि अमेरिका और इजरायल दोनों अयातुल्ला खामेनेई को सीधे निशाना बनाने पर विचार कर रहे हैं. ऐसा माना जाता है कि उनकी हत्या के बाद ईरान परमाणु हथियार कार्यक्रम से पीछे हट सकता है. यह ईरान के लिए एक बड़ा खतरा है, और यही कारण है कि ईरान इन देशों को क्रमशः 'बड़ा शैतान' और 'छोटा शैतान' कहता है. अमेरिका और इजरायल का यह आक्रामक रुख निश्चित रूप से ईरान के अंदर प्रतिक्रिया को जन्म देगा. ईरान पहले ही संकेत दे चुका है कि वह परमाणु अप्रसार संधि एनपीटी से बाहर निकल सकता है, जो स्थिति को और भी जटिल बना देगा. सवाल यह है कि क्या ये हमले ईरान को अपने परमाणु महत्वाकांक्षाओं से पीछे हटने पर मजबूर करेंगे, या वे उसे और अधिक कट्टरपंथी और अप्रत्याशित बना देंगे?

एक तरफ, इन कार्रवाइयों का लक्ष्य मध्य पूर्व को परमाणु हथियारों से सुरक्षित रखना है. दूसरी तरफ, शासन परिवर्तन का प्रयास एक संप्रभु राष्ट्र के आंतरिक मामलों में सीधा हस्तक्षेप है, जिसके गंभीर परिणाम हो सकते हैं. इससे न केवल ईरान में उथल-पुथल मच सकती है, बल्कि पूरे क्षेत्र में एक बड़ा संघर्ष छिड़ सकता है, जिसमें अन्य क्षेत्रीय और वैश्विक शक्तियां भी शामिल हो सकती हैं.

यह समय है कि अंतर्राष्ट्रीय समुदाय इस स्थिति को अत्यंत गंभीरता से ले. केवल सैन्य कार्रवाई और शासन परिवर्तन की इच्छा से समस्या का स्थायी समाधान नहीं निकल सकता. कूटनीति, संवाद और बहुपक्षीय बातचीत ही एक ऐसा रास्ता हो सकता है जो इस क्षेत्र में शांति और स्थिरता सुनिश्चित करे, बजाय कि इसे एक और विनाशकारी संघर्ष की ओर धकेले. ईरान को भी अपनी प्रतिबद्धताओं का पालन करना चाहिए और अंतर्राष्ट्रीय समुदाय को उसके साथ एक समाधान खोजने के लिए मिलकर काम करना चाहिए जो सभी पक्षों की सुरक्षा चिंताओं को दूर करे.

विंध्य की डायरी

दो अनार, सौ बीमार की कहावत कांग्रेस में चरितार्थ

डा. रवि तिवारी

दो अनार सौ बीमार की कहावत कांग्रेस पर चरितार्थ हो रही है. दो पद के लिये दावेदारो की लंबी फेहरिस्त है. हर कोई अध्यक्ष का ताज पहनने के लिये दांव-पेच में लगा है. प्रदेश में कांग्रेस के सुदृढ़ीकरण को लेकर शुरू किये गये संगठन सृजन अभियान के तहत समूचे विंध्य में नियुक्त पर्यवेक्षको ने नेताओं और कार्यकर्ताओं से मिलकर उनकी मंशा जानी और संगठन की नब्ज टटोली. वन-टू-वन रायशुमारी के साथ शहर और जिलाध्यक्ष के दावेदारो के आवेदन लिये गये. हर जिले में सूची इतनी लम्बी है कि पर्यवेक्षको का दिमाग चकरा गया.

राजनीतिक छत्रप अपने चहेतो को अध्यक्ष का ताज पहनाने के लिये गुणा गणित में लगे है. अंदर ही अंदर कई जगह विरोध का स्वर अंकुरित हो रहा है. ऊर्जाधानी में लंबे समय तक अध्यक्ष की कुर्सी हरिजन-आदिवासी के पास रही. लेकिन कांग्रेस को यहां खोने के अलावा कुछ नही मिला और अब चर्चा है कि फिर से आदिवासी कोटे में ही अध्यक्षी देने की तैयारी है. ऐसे में सवर्ण वर्ग के अंदर विरोध की ज्वाला धधक रही है. कमोबेश सतना-रीवा में भी अंदर ही अंदर गुटबाजी और विरोध की चिंगारी सुलग रही है. दरअसल अध्यक्ष की दौड़ में ऐसे लोग शामिल है जो 60 की उम्र पार कर चुके है, फिर भी अध्यक्ष बनने के लिये आतुर है.

रीवा में शहर अध्यक्ष के दावेदारो की सूची लम्बी है तो जिलाध्यक्ष के लिये दर्जन भर दावेदार है. अब संगठन दावेदारो के गुण और कमियो को मापने के बाद यह तय करेगा कि जिला और शहर की कमान किसे सौपी जाय. हालाकि अभी उठा पटक मची हुई है, नामो की घोषणा होने के बाद विरोध का ज्वालामुखी फटना भी तय है.

ट्रांसफर का बुखार नहीं उतरा

इस समय ट्रांसफर का मौसम चल रहा है कोई आ रहा है तो कोई जा रहा है. स्वागत और विदाई के दौर में नेताओ के दरवाजो पर भीड़ देखने को मिल रही है. मलाईदार कुर्सी से जिसे हटाकर बाहर का रास्ता दिखाया गया है वह जुगाड़ लगाकर वापस हो रहे है. सिंगरौली में पुलिस और राजस्व विभाग के स्थानान्तरण के बाद आउट-गोइंग का खेल चल रहा है. प्रभारी मंत्री के यहा जिसकी इंट्री है वह आसानी से लिखवा कर मुख्यालय पहुंच रहे है और फिर उनका स्थानान्तरण निरस्त हो जाता है. इसमें सबसे ज्यादा किरकिरी राजस्व और पुलिस विभाग की हो रही है.

जिला स्तर पर जिनका स्थानान्तरण हुआ वह प्रभारी मंत्री के यहा दस्तक देकर बड़े आसानी से स्थानान्तरण निरस्त कराकर आला अफसरो को चिढ़ा रहे है.

मोदी के 11 वर्ष की उपलब्धियां

मोदी की दूरदर्शिता में श्रेष्ठ भारत

दिलीप झा

> इससे पूर्व किसी भी भारतीय प्रधानमंत्री को वैश्विक स्तर पर इतनी बड़ी संख्या में सम्मान नहीं मिला है. इस बात से भी देश का बच्चा-बच्चा वाकिफ हैं कि मोदी के नेतृत्व वाले 11 वर्षों में देश ने बुलंद हौसलों के साथ विकास के रफ्तार में लगातार वृद्धि की है. अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष के अनुमान के मुताबिक 2028 तक भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने जा रही और इसमें एआई की बड़ी भूमिका होने वाली है.

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के शासनकाल के 11 वर्ष उपलब्धियों से भरा हुआ है। इन वर्षों में मोदी ने देश की अर्थव्यवस्था और राजनीतिक परिदृश्य में क्रांतिकारी परिवर्तन लाए हैं. यह बात देश की जनता मुक्त कंठों से महसूस करती हैं और यही कारण है कि जनता ने उन्हें तीसरी बार भी प्रधानमंत्री बनने का सुअवसर दिया है. इन वर्षों में सबसे बड़ा काम यह हुआ कि आम आदमी सशक्त हुआ है. महिलाओं को हर स्तर पर आत्मनिर्भर बनाने में मोदी की दूरदर्शिता अबतक के सभी प्रधानमंत्री से अव्वल मानी जाती है. इसका श्रेय उनके अथक परिश्रम को ही जाता है. उम्र के इस पड़ाव में भी मोदी जितना परिश्रम करते हैं वह किसी राजनेता से संभव नहीं है. तीन देशों की 27 हजार किलोमीटर की लंबी यात्रा के बाद वह 19 जून को भारत लौटे और 20 जून को वह बिहार एवं ओडिशा के दौरे पर थे. उनकी यह ऊर्जा किसी भी राजनेता के लिए प्रेरणास्रोत है. उन्होंने अपनी जीवनशैली को इस अंदाज में ढाला है कि वह थकते नहीं है. यह कहने में किसी को कोई संकोच नहीं है कि दशकों बाद देश को ऐसा प्रधानमंत्री मिला है जो देश के लिए अपने जीवन को खपा दिया है. यह विडंबना की बात है कि देश के विपक्षी दलों के नेताओं को मोदी की खूबियां समझ में अब भी नहीं आ रही है क्योंकि उनका काम सिर्फ और सिर्फ विरोध करना है. इन सबके बावजूद मोदी की सेहत पर इसका कोई असर नहीं पड़ता है क्योंकि वह राजनीति के तपे हुए खिलाड़ी माने जाते हैं. पहलगाम हमले के बाद मोदी ने पाकिस्तान को सबक सिखाने के लिए ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम से उसकी औकात को धाराशाई कर विश्व बिरादरी को यह संदेश दिया कि भारत की ओर आंख उठाकर देखने वालों का यही हश्र होगा. पाकिस्तान में आतंकियों के 11 कैंप को भारतीय सेना ने ध्वस्त कर यह दिखा दिया कि मोदी का व्यक्तित्व पूर्व गृह मंत्री सरदार वल्लभ भाई पटेल की तरह बुलंद हैं और इसी वजह से उन्हें खुली छूट थी कि वे आतंकियों को नेस्तनाबूद कर दें. भारतीय सेना की तरफ महज चार दिन की कार्रवाई में पाकिस्तान के कई एयर बेस तबाह हो गए तो उनके होश उड़ गए. परमाणु हमले की धमकी देने वाला पाकिस्तान को मोदी की कूटनीतिक चाल ने यह समझा दिया कि भारत के साथ विश्वासघात किया तो उसका मुंह तोड़ जवाब देने वाला यह नया भारत है. आज दुनिया भर में भारत का डंका इसलिए बज रहा है क्योंकि मोदी जैसे लौह पुरुष सरीखे व्यक्तित्व के हाथ में भारत की कमान है. इस बात से इंकार नहीं किया जा सकता है कि प्रधानमंत्री मोदी के बारे में पूरे देश में लोग कहते है कि वह न तो कभी कमजोर थे , न अभी कमजोर हुए हैं और न कभी कमजोर होंगे क्योंकि वह अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति से देश को राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विरासत के साथ आगे बढ़ना उनके जीवन का मकसद है और इसमें उन्हें निरंतर सफलता मिल रही है. जी-7 शिखर सम्मेलन के मंच से भी आतंकवाद के खिलाफ मोदी ने दो टूक शब्दों में कहा कि जो देश इसको पोषित करने की कोशिश करते हैं अथवा समर्थन करते हैं वे इसकी आग में खुद जल रहे हैं और यह बात उन्हें भलीभांति समझ में नहीं आती है तो उनके लिए विनाशकारी है. उन्होंने ईरान इजरायल युद्ध पर भी चिंता जाहिर करते हुए कहा कि आज का समय युद्ध का नहीं बुद्ध का है. उन्होंने इससे पूर्व भी विश्व के विभिन्न मंचों से अनेकों बार कहा है कि आतंकवाद के खिलाफ दोहरा चरित्र अपनाने वाले देशों को इस तरह की हरकत से परहेज करना चाहिए. यह भी कटु सत्य है कि भारत के राजनीतिक इतिहास में आतंकवाद के खिलाफ इतने मुखर होकर बोलने वाले मोदी पहले नेता हैं और उनकी यही हिम्मत उन्हें विश्व के सबसे बड़े नेता के रूप में मान्यता देती है. पीएम नरेंद्र मोदी देश के पहले नेता हैं जिन्हें विश्व के सर्वाधिक 23 सम्मान हासिल हुए हैं.

(लेखक नवभारत भोपाल के संपादक हैं)

जनप्रतिनिधियों के साथ अफसरों की 'योग साधना'

शनिवार योग दिवस के नाम पर रहा, हर किसी ने निरोगी शरीर रखने के लिये योग किया. जनप्रतिनिधियो के साथ अफसरो ने योग साधना की. रिमझिम बारिश के बीच सभी ने ध्यान लगाया और योग के महत्व को बताया. रीवा मार्तण्ड स्कूल मैदान में उपमुख्यमंत्री राजेन्द्र शुक्ला ने अधिकारियों के साथ योग किया और योग के महत्व के बारे में बताया. योग हमारे शरीर को निरोगी रखने में सहायक है और इसे दिनचर्या में शामिल करने आवाहन किया. राज्य मंत्री प्रतिमा बागरी ने भी जनप्रतिनिधि और अफसरो के साथ योग किया. स्कूल-कालेज से लेकर सभी जगह शनिवार को योगाभ्यास किया गया. रिमझिम बारिश भी योग साधना को नही रोक पाई.

बिहार चुनाव : तेजस्वी-चिराग चर्चा में

इसी वर्ष होनेवाले बिहार विधानसभा चुनाव के लिए एनडीए का चेहरा सम्राट चौधरी न होकर नीतीश कुमार ही रहेंगे. बीजेपी का केंद्रीय नेतृत्व जानता है कि नीतीश की शारीरिक-मानसिक स्थिति चाहे जैसी भी रहे, उनका साथ छोड़ना नुकसानदेह रहेगा. उन्हें सामने रखकर बीजेपी शासन की पकड़ अपने हाथों में कायम रखना चाहेगी. सुशीलकुमार मोदी के निधन के बाद बीजेपी के पास बिहार में कोई उल्लेखनीय प्रभावशाली चेहरा नहीं रह गया है. राजद के लालूप्रसाद यादव और जदयू के नीतीश कुमार का स्वास्थ्य प्रायः ठीक नहीं रहता. इस दौरान बिहार की चुनावी राजनीति में राजद के तेजस्वी यादव तथा लोजपा के चिराग पासवान ही विशेष चर्चा में हैं. यद्यपि बिहार विधानसभा चुनाव में प्रशांत किशोर तथा 'आप' के संजय सिंह भी अपनी पार्टियों की किस्मत आजमाना चाहेंगे लेकिन प्रदेश में विशेष बदलाव के आसार नहीं हैं. राहुल गांधी कांग्रेस की ओर से कन्हैया कुमार को आगे बढ़ाने की फिराक में हैं. कांग्रेस ने हर महिला को प्रतिमाह न्यूनतम 2500 रुपए देनेवाली माई-बहन सम्मान योजना की चुनावी घोषणा की है. इससे तेजस्वी यादव का गणित बिगड़ सकता है. प्रधानमंत्री मोदी और गृहमंत्री अमित शाह को पता है कि चिराग पासवान की अपनी सीमाएं है और वह कभी भी पाला बदल सकते हैं इसलिए नीतीश कुमार पर ही बीजेपी निर्भर रहेगी. राजनीति में स्वर बदलते रहते हैं. लगभग 8 वर्ष पहले यूपी के चुनाव प्रचार में प्रधानमंत्री मोदी ने तेजस्वी और चिराग दोनों को निशाने पर लेते हुए कहा था कि यह चुनाव अब दो लड़कों की कहानी बन गया है. एक अपनी पार्टी को डुबो रहा है और दूसरा सरकार को. अब भी यदि चिराग के लिए बीजेपी ने मुंहमांगी सीटें नहीं छोड़ीं तो वह लोजपा के प्रत्याशी खड़े करके दूसरों का खेल बिगाड़ सकते हैं. पिछले बिहार विधानसभा चुनाव में उन्होंने राजद के वोट काटे थे.

निशानेबाज

मोदी को करना था जगन्नाथ का दर्शन ठुकराया ट्रंप का लंच निमंत्रण

पड़ोसी ने हमसे कहा, निशानेबाज, प्रधानमंत्री मोदी ने जगत के नाथ को पूरी प्राथमिकता देते हुए महाशक्ति कहलानेवाले अमेरिका के राष्ट्रपति ट्रंप का लंच का निमंत्रण अस्वीकार कर दिया. जब कनाडा में जी-7 शिखर सम्मेलन को बीच में ही छोड़कर ट्रंप अमेरिका लौट रहे थे तब उन्होंने मोदी से कहा कि आप कनाडा तो आ ही गए हैं. कुछ ही दूरी पर वाशिंगटन है. वहां आइए और मेरे साथ लंच कीजिए. इस पर मोदी ने उन्हें साफ शब्दों में कह दिया कि उन्हें महाप्रभु जगन्नाथ का दर्शन करने पुरी जाना है जो कि ज्यादा महत्वपूर्ण है. यह कार्यक्रम पहले से तय हो चुका है.

हमने कहा, प्रधानमंत्री ने बिल्कुल ठीक किया. ईश्वर से बड़ा कोई नहीं है. वह ओमनीप्रेजेंट, ओमनीशिएंट और ओमनीपोटेंट है. अमेरिका ग्रेट हो सकता है मगर भगवान सुप्रीम हैं.

पड़ोसी ने कहा, निशानेबाज, ज्यादा इंग्लिश मत झाड़िए. आप कह सकते थे कि ईश्वर सर्वत्र उपस्थित, सर्वशक्तिमान हैं. ईश्वर से मुंह मोड़कर ट्रंप के लंच पर जाने में कोई तुक नहीं था. इसके अलावा यह अमेरिका की राजकीय यात्रा या स्टेट विजिट का विधिवत लिखित निमंत्रण भी नहीं था. ट्रंप का लहजा ऐसा था कि आओ, व्हाइट हाउस में खाना खा लो. दरअसल खाने की कोई कमी नहीं है. कृष्ण भगवान ने भी दुर्योधन का मेवा-मिष्ठान्न ठुकराते हुए कहा था कि भोजन तभी किया जाता है जब बहुत भूख लगी हो या कोई बहुत प्रेम से खिलाए. न तो मैं भूखा हूं, न तुम्हारे मन में मेरे प्रति कोई प्रेम है. भगवान ने वहां से जाकर महात्मा विदुर के यहां सादा भोजन किया. प्रभु प्रेम के भूखे हैं तभी तो उन्होंने शबरी के बेर और सुदामा के पोहे खाए.

हमने कहा, मोदी को मालूम है कि सनकी ट्रंप का रवैया अप्रत्याशित रहता है. यूक्रेन के राष्ट्रपति जेलेंस्की को उन्होंने बगैर खाना खिलाए अपमानित कर व्हाइट हाउस से चले जाने को कहा था जबकि लंच रेडी था और परोसने की तैयारी चल रही थी. ट्रंप ने पाकिस्तानी सेना प्रमुख मुनीर को पनीर खिलाकर पटाने की कोशिश की कि ईरान पर हमले में पाकिस्तान अमेरिका को सहयोग दे. पाकिस्तानी एयरबेस से ईरान पर स्ट्राइक करने की ट्रंप की योजना है. ट्रंप मोदी को खाना खिलाकर नोबल शांति पुरस्कार के लिए अपने नाम का समर्थन करने को कह सकते थे. इसीलिए कहा गया है- बड़े लोगों से मिलने में हमेशा फासला रखना, जहां दरिया समंदर से मिला, दरिया नहीं रहता.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 11942 -डॉ. सागर खादीवाला

बाएं से दाएं

1. तलवार, खड्ग (सं.) 3. जो हाल ही में अस्तित्व में आया हो (सं.) 6. जीता हुआ, अंग्रेजों के शासनकाल में दी जाने वाली एक बड़ी उपाधि 7. पति की बहन 9. शासक, बड़ा अधिकारी, हुक्म करने वाला (उर्दू) 11. श्रवण कराना, भला बुरा कहना. 12. फकीर, भिखारी (उर्दू) 14. राजस्थानी राजाओं की एक उपाधि 15. दशन, मुंह में निकली हुई वे हड्डियां जिनसे भोजन चबाया जाता है 16. मिलाप, मिलन, जोड़ने का कार्य, प्राणायाम 17. स्याही रखने का छोटा पात्र 19. न्यायालय 22. हवाखोरी (उर्दू) 23. स्वर्ग

ऊपर से नीचे

1. ऐसा, जैसा, समान, तुल्य 2. सोने की जगह पर सिर की ओर का भाग 3. गिनती में नौ के स्थान पर, नवां 4. सूर्य (सं.) 5. शरीर, देह 8. भय, खौफ (उर्दू) 10. तट, अंतिम सिरा 11. अच्छी चलने से पैर धंस जाता हो 13. वेदों के तरह से प्रवृत्त या मुकर्रर किया हुआ (सं.) 12. कीचड़, वह जमीन जिस पर अंतिम भाग जिसमें आत्मा, ईश्वर, जगत आदि का विवेचन है 18. वायु द्वारा उत्पन्न 19. स्त्रियों के लिए संबोधन 20. जलन, ताप, मुर्दा जलाना 21. निश्चल, हो-हल्ला से रहित

Solution 11941

अ	नु	सं	धा	न		र	ब
भि		ग	म	क	ना		द
म	द्वि	म		छि	प	क	ली
न्यु			न	क	ना	म	
	क	भी		नी			मि
अ		मां	द		ब	गु	ला
सा	या	स		ना	का		व
र		क	चू	म	र		ट

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में मित्र के सहयोग से आर्थिक कष्ट दूर होगा, सामाजिक कार्यों में ख्याति प्राप्त होगी, वर्ष के मध्य में साहसपूर्ण कार्यों में यश प्राप्त होगा, जल्दबाजी के कार्यों से बचें, वर्ष के अन्त में शिक्षा के क्षेत्र में व्यवधान आयेगा, धार्मिक कार्यों में व्यय और रूचि रहेगी, परिश्रम और भागदौड़ सफल होगा.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को साहसपूर्ण कार्यों में सफलता मिलेगी, जल्दबाजी में लिये गये निर्णयों से शंका प्राप्त होगी, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को लेखनादि कार्यों में सफलता प्राप्त होगी, सिंह राशि के व्यक्तियों को व्यापार व्यवसाय में प्रगढ़ता आयेगी, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को परेशानी आ सकती है, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को संयम से काम लेना हितकर रहेगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को सामाजिक कार्यों में ख्याति प्राप्त होगी.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक सुन्दर, स्वस्थ्य, भाग्यवान, और हंसमुख होगा, इसकी आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी, जन्म स्थान के पास ही अपना भाग्योदय करेगा, माता पिता को जीवन में सुखी रखेगा.

मेष- जिसे आप चाहते हैं, उससे मन की बात कह दें, इससे रिश्ते मजबूत होंगे, सुख सुविधा पर खर्च होगा, व्यापार में सफलता मिलेगी, निजी कार्यों में मन लगेगा.

वृषभ- चुप रहने से लोग गलत समझ सकते हैं, उनझनें दूर होंगी, कोर्ट कचहरी के कार्यों में सफलता प्राप्त होगी, गुप्त शत्रुओं का शमन होगा.

मिथुन- कानूनी मामले में पक्ष मजबूत होगा, अधूरे काम पूरे होंगे, कोर्ट कचहरी के कार्यों में सफलता प्राप्त होगी, गुप्त शत्रुओं का शमन होगा.

कर्क- भावुकता में लिये फैसले बदलना पड़ेंगे, राजकीय मामले पक्ष में सुलझेंगे, पारिवारिक जीवन में सुख शांति रहेगी, व्यापार व्यवसाय में सफलता मिलेगी.

सिंह- नई जिम्मेदारी आने से व्यस्तता बढ़ेगी, सामाजिक कामकाज में खर्च होगा, शिक्षा संतान के कार्यों में सफलता मिलेगी, आर्थिक स्थिति अच्छी रहेगी.

कन्या- कामकाज में देरी से तनाव बढ़ेगा, बुजुर्गों के स्वास्थ्य की चिन्ता होगी, भूमि भवन मकान आदि से संबंधित विवादों का समाधान होगा, अतिथि आगमन होगा.

तुला- दौड़धूप से कामकाज पूरा होगा,सामाजिक क्षेत्र में व्यस्तता बढ़ेगी, सुख साधनों में वृद्धि होगी, आजीविका के प्रयासों में सफलता के योग है.

वृश्चिक- रूकी हुई योजनाओं में गति आयेगी, शिक्षा के प्रयासों को लेकर यात्रा होगी, मित्रों के सहयोग से कार्य प्रारंभ होंगे, थकान भी महसूस होगी.

धनु- विरोधी परेशान करेंगे, अधिकारी से संपर्क का लाभ मिलेगा, धार्मिक कार्य बनेगा, संतान संबंधी समाचार मिलेगा, नए कार्यों में हर्ष रहेगा.

मकर- कार्य बनाने किसी की सिफारिश करना पडेगी, मेहनत का लाभ होगा, शारीरिक शिथिलता रहेगी, मित्र वर्ग आपकी भरपूर मदद करेंगे.

कुम्भ- जीवनसाथी की भावनाओं का ध्यान रखें, अपनों की मदद करके प्रसन्नता होगी, हर्षदायक वातावरण रहेगा, गुमी वस्तु मिलने से संतोष रहेगा.

मीन- खानपान में सावधानी रखें, रोजगार के नये अवसर मिलेंगे, दिनचर्या नियमित रहेगी, सोचे विचारे कामपूरे होंगे, संयम से कार्य करें.

उदयकालीन ग्रह चाल

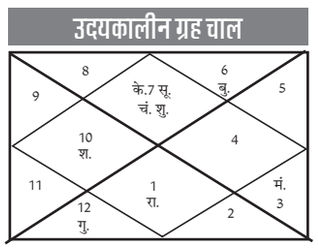

पंचांग

रा.मि. 03 संवत् 2082 आषाढ़ कृष्ण चर्तुदशी भौमवासरे शाम 6/7, रोहिणी नक्षत्रे दिन 12/28, शूल योगे दिन 9/38, विष्टि करणे सू.उ. 5/13 सू.अ. 6/47, चन्द्रचार वृषभ रात 11/49 से मिथुन, शु.रा. 2, 4,5,8,9,12 अ.रा. 3,6,7,10,11,1 शुभांक- 4,6,0.

व्यापार भविष्य

आषाढ़ कृष्ण चर्तुदशी को रोहिणी नक्षत्र के प्रभाव से गुड़ खांड, सरसों, के भाव में मंदी होगी, जीरा, धनियां, लौंग, कालीमिर्च, मैथी में मंदी होगी, सोना, चांदी, में स्थिरता रहेगी, लाल वस्तुओं में घटाबढी, होगी. भाग्यांक 2614 है.

SUDOKU 7074

8	5			3		6	1	
6	7		9		4		2	
2					1			4
	3	9			7			
	6	2		8		4	7	
			6			9	3	
3			5					7
	4		1		6		8	3
	8	5		7			9	6

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-दोकू 7073

6	3	7	2	1	5	4	8	9
9	8	4	3	7	6	5	2	1
2	5	1	9	4	8	7	3	6
3	6	8	5	9	7	1	4	2
7	2	9	4	8	1	6	5	3
4	1	5	6	3	2	8	9	7
5	7	6	8	2	9	3	1	4
8	4	2	1	6	3	9	7	5
1	9	3	7	5	4	2	6	8